Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 12, Issue 01, January-June, 2024
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2024

कुमाँऊ की प्राचीन लोक गाथा ननौल

YOGESH KHETWAL
Lane No. 10 A, Ganga Vihar, Canal Road, Kaulagarh, Dehradun

सार: *उत्तराखण्ड की कुल देवी मां नन्दा है। लोक त्यौहार, आठो, जागर मेले कोई भी उत्सव हो प्रथम चरण मां नन्दा की आराधना से प्रारम्भ होता है। नन्दा नाम की देवी जो नन्द से उत्पन्न होने वाली है उनकी यदि भक्ति पूर्वक स्तुति की जाये तो तीनों लोकों को उपासक के अधीन कर देती है। कुमॉऊ की संस्कृति व संस्कार अति प्राचीन है जब से देवी के आवाहन स्तुति परक मंत्र बने हैं तभी से उसी प्रकार का अर्थ रखने वाले संस्कार गीतो की तरह लोक गाथा 'ननौल' गाये जाते हैं। कुमाऊं की प्राचीन लोक गाथा ननोल नंदा-आली लगभग 250 साल पुरानी लोक गाथा है। माँ नंदा की आराधना के लिए गाये जाने वाला यह गीत 8 दिन तक गाया व बजाया जाता है। इसे कुमाऊनी भाषा में 'आठो' कहकर भी पुकारा जाता है।*

कुंजी शब्द: *कुमाँऊ, लोक गाथा ननौल, नंदा देवी, आठो।*

प्रस्तावना

हमारे धर्म में देवी देवताओं को आमंत्रित करने के मंत्र बने हैं ये मंत्र वैदिक तथा पौराणिक दोनों प्रकार के होते हैं उन मंत्रों द्वारा देवी देवताओं को आंमत्रित करने के लिए विशेष प्रकार के विधि विधान बने हैं जैसे तिथि, वार शारीरिक पवित्रता स्थानीय आदि। आमंत्रण को दूसरे शब्द में आवाहन कहते हैं जब सूयोग्य ब्राह्मण विधि विधान से आवाहन एवं पूजन करते हैं तो उससे सम्बन्धित देवी देवता प्रकट होते हैं इस आयोजन में विशेष प्रकार के महावाद्य यंत्र शंख, घंटे, ढोल, दमाऊ, भौखर आदि बजाये जाते हैं। उत्तराखण्ड की कुल देवी मां नन्दा है। लोक त्यौहार, आठो, जागर मेले कोई भी उत्सव हो प्रथम चरण मां नन्दा की आराधना से प्रारम्भ होता है। नन्दा नाम की देवी जो नन्द से उत्पन्न होने वाली है उनकी यदि भक्ति पूर्वक स्तुति की जाये तो तीनों लोकों को उपासक के अधीन कर देती है। दुर्गा सप्तशती में देवी की अनुभूत 6 देवीयाँ कही गई हैं, नन्दा, रक्त दन्तीका, शाकम्भरी, दुर्गा, भीमा, भ्रामरी। ननौल गाथा भी मां नन्दा देवी की आराधना में गाये जाने वाले जागर को प्रस्तुत करता है। कुमाऊँ में विभिन्न पर्वो, उत्सवों, त्यौहारों, मेले, व्रतों, धार्मिक अनुष्ठानों पर यहां के लोक मानस द्वारा लोक साहित्य के विविध रूप अभिव्यक्ति को प्राप्त होते है।[1]

इतिहास

कुमॉऊ की संस्कृति व संस्कार अति प्राचीन है यहां की देवभूमी में अनेक ऋषि मुनियों ने तप किया है। यह देवलोकों की नगरी हैं जहां अनेक सन्तों ने अपनी प्राण व आध्यात्मिक शाक्ति जन-जन तक फैलायी है। उत्तराखण्ड भूमी को देवभूमी कहते हैं। अनेक देवी देवता यहां वास करते हैं यही कारण है कि आज भी यहां दूर जंगलों में, घाटियों में, देवी देवताओं के मन्दिर हैं। जब से देवी जी के आवाहन स्तुति परक मंत्र बने हैं तभी से उसी प्रकार का अर्थ रखने वाले संस्कार गीतो की तरह ननौल गाये जाते हैं। हमारी संस्कृति में नामकरण, यज्ञोपवीत, विवाह संस्कार होते हैं इन सब के विस्तृत विधान बने हैं जब कुलपुरोहित और ब्राहमण इन संस्कारों को सम्पादित कर रहे होते हैं उनके साथ साथ हमारी महिलाएं, सुन्दर वस्त्राभूषण पहन कर प्रसंग के अनुसार स्थानीय बोली में भावपूर्ण होकर मधुर संस्कार गीत गाती हैं, जो सबके अन्तःकरण को छूकर द्रवित कर देती हैं। कहा जाता है कि भगवान अन्तःकरण की सच्ची पुकार को सुनते हैं। ये संस्कार गीत देवी जी को आकर्षित कर प्रकट करा देती है। इस भाव को केवल सहृदय आस्तिक व्यक्ति ही हृदयग्राह कर पाते हैं हर कोई नहीं। इसी ननौल रूपी संस्कार गीत, जो गायक की हृदय की पुकार होती है भगवती नंदा उसे भाव से द्रवित होकर किसी स्त्री या पुरुष शरीर में अवतरित हो जाती है। भगवती नंदा की अपने भक्तों पर असीम दया एवं कृपा के कारण वह अवतरित होकर सच्चे भक्तों की मनोकामना पूर्ण करती है। इसी क्रम में इन सिद्ध स्थानों में जो संतान प्राप्ति के लिए सारी रात दीपक लेकर खड़े होकर तपस्या करते हैं उनकी निश्चित रूप से मनोकामना पूरी होती है। इसी प्रकार की देवी जी अन्य प्रकार की मनोकामनाएं भी भक्तों की पूर्ण करती है।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 12, Issue 01, January-June, 2024
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2024

लोक गाथा ननौल का स्वरूप

कुमाऊं की प्राचीन लोक गाथा ननोल नंदा-आली लगभग 250 साल पुरानी लोक गाथा है। माँ नंदा की आराधना के लिए गाये जाने वाला यह गीत 8 दिन तक गाया व बजाया जाता है। इसे कुमाऊनी भाषा में 'आठो' कहकर भी पुकारा जाता है।

हे बाई नन्दुलों देवी बरूदेणा हाया हो

हें बाई नन्दुलों बे बरू देणा हाया हो

मुख्य रूप से गाथा गायक सबसे पहले स्थानीय देवताओं को आमंत्रण देता है। इसके पश्चात पंच नामदेवता, 22 छुरमुल देवता, बदिया कोट देवता, लाटो जोशी और भी अनेक देवी देवताओं को आमंत्रण दिया जाता है। आमंत्रण के पश्चात 'डीकरा' बनाया जाता है जिसे मां नंदा का आसान कहते हैं। यह डीकरा केले के पेड़ से बनाया जाता है। तत्पश्चात सभी मुख्य गायक व सह'गायक मां की आराधना करते हुए कहते हैं 'हे मां, तुम हमारा निमंत्रण स्वीकार करो। तुम्हें हमारी होने वाले अनुष्ठान में आना है।'

यह गाथा सर्वप्रथम 1774-1780 के आसपास आरंभ हुई थी। मोहन सिंह आठो के मुख्य जागरिया थे। इनकी संतान न होने से पुना सिंह ऑठो के डाडर हुए। उनकी मृत्यु के पश्चात श्री हरक सिंह ऑठो के जगरिया बने। उनके बाद श्री राम सिंह उनके, बाद मदन राम और कालू राम इस समय के सबसे अच्छे नन्दा देवी के जानकार हैं। पारम्परिक रूप से लयबद्ध होकर तर्ज सहित आठों गाते हैं। 'सेरी' 'मुराई' व 'चिमटा' इसके मुख्य वाद्य हैं।

आधुनिक समय में गाथा ननौल

आज भी कुछ स्थानों में गाथा ननौल प्रत्येक वर्ष सावन भादो में मनाई जाती है लगातार 8 दिन तक महावाद्यों व महामंत्रों के साथ देवी को अवतरित करने के बोल उच्चारण किए जाते हैं। मुख्य गायक व सह गायक इन्ही मंत्रों को संगीतमय ध्वनि देकर जागर को पूरा करते हैं। मां का आसान बनाया जाता है तथा आठवें दिन के अन्तिम चरण में इसे विसर्जित कर दिया जाता है। आधुनिक जीवन की तेज रफ्तार और तकनीकी उन्नति के कारण ध्वनियों स्थानों व जागर गाने की विधि में परिवर्तन आ गया है। आधुनिक समय में भी मुख्य कलाकार मदन राम व कालू राम इस परम्परा को ताल व भाग सहित गा रहें हैं। आज भी गाथा गायक हर साल अल्मोड़ा नन्दा देवी के मेले में यह जागर लगातें हैं और लगातार 8 दिन तक मां की आराधना करते हैं। मां के अभिन्न रूपों को संगीतमय रूप देकर श्रोताओं को मंद मुक्त करते हैं। जब गायक सच्चे हृदय से मां को होने वाले अनुष्ठान में बुलाते हैं तो ऐसा प्रतीत होता है कि मानों मां उन्हें साक्षत रूप में उन्हें दर्शन दे रही है यही सच्ची भक्ति व भावना के कारण आज भी यह विधा सुनने को मिलती है।

गाथा ननौल के मुख्य चरण

गाथा ननौल दस चरणों में गाई जाती है इनमें से कुछ मुख्य 'झोडे' (चरण) इस प्रकार हैं

पाण्डवों का झोडा

पाँव भाई पाण्डव मनसुबा कराल

हिटो माई हम घुमनू उत्तराखण्ड

पाँच भाई पाण्डू व बटिणाए फैंग्याया

पाँच भाई पाण्डव ल्है ग्याय जागेश्वर

सूखा पडने में देवी नन्दा की मनौती; वर्षा कराने हेतु गाये जाने वाले जागर

पेंली नामा लियों गणपति देवा।

कौन पुजाला गणपति ज्यू हो।।

हम पुजोला गणपति ज्यूहो।

नरा पुजाला गणपति ज्यूहो।।

आसन्ती देव का झोडा

जोशीमठ में आसन्ती देव राजा

य राजौ को माटी कैसो अन्न

ढुंडा अयी जैसो छन

राजा लै हाजर बुलाय मन्तरी।

राजा आसन्ती थरू बुलाल

तुम मंतरी बरमा बुलाओं

हम जानू धूरी शिकारा

है गाये बरमा हाजारा

नन्दा देवी की वन्दना

सुफल दैंण है जायाए तुम मातु सती भगवती

हरि बे कुबुद्धि हमूँ दिये तू माता सुमती

हमस ब में भरद ज्ञान हरल हमारों अज्ञान

वादी दो वरदो ऐसा जा गाऊँ गुण. गान

लोक गाथा के विलुप्त के कारण

जागर गाने की प्रथा मुख्य रूप से हरिजनों में देखी गयी है। शिक्षित न होने के कारण इनका जीवन मुश्किलों भरा होता है। ये अपना जीवन मजदूरी व खेती करके चलाते हैं। यह प्रथा वर्तमान समय में भी चली आ रही है। रोजगार और जीवन शैली की तलाश में गांव से शहरों की ओर ये लोग पलायन कर रहे हैं क्योंकि या तो लोक कलाकारों को प्रर्याप्त आर्थिक समर्थन नहीं मिल रहें हैं या तो सरकार द्वारा लोक विधाओं के संरक्षण और प्रोत्साहन के लिए प्रर्याप्त संसाधन भी नहीं किये गये हैं। यह विधायें दिन प्रतिदिन विलुप्त होती जा रही हैं। लोगों की प्राथमिकताएं बदल गई हैं काला और संस्कृति की तुलना में आधुनिक जीवन शैली को अधिक महत्व देने लगे हैं। लोक गाथा किसी भी रूप में आधुनिक नहीं है बल्कि काल के प्रवाह का मौखिक या दस्तावेजी स्वरूप ही है। आज की चकाचौंध भरी दुनिया वाला आत्म-केन्द्रित युवा स्वयं को इन लोक गाथाओं से जोड़ नहीं पाता ।[2] लोक गायक जन्मजात पैदा होता है। उसके कण्ठ से संगीत स्वतः ही फूटता है

जहाँ पर जिस माहौल में उसे गाने का अवसर मिलता है बिना पूर्वाभ्यास के वह अपना गायन प्रारम्भ कर देता है। अपनी आशुकवित्व की योग्यता के आधार पर उसी समय एक नये गीत की रचना करके जन मानस के सामने प्रस्तुत कर देता है। समय निरन्तर परिवर्तनशील है, यही कारण है कि लोक गीतों में बदलाव आने लगे है।[3]

निष्कर्ष

उत्तराखण्ड की कुल देवी मां नन्दा है। लोक त्यौहार, आठो, जागर मेले कोई भी उत्सव हो प्रथम चरण मां नन्दा की आराधना से प्रारम्भ होता है। नन्दा नाम की देवी जो नन्द से उत्पन्न होने वाली है उनकी यदि भक्ति पूर्वक स्तुति की जाये तो तीनों लोकों को उपासक के अधीन कर देती है। है। कुमाऊं की प्राचीन लोक गाथा ननोल पुरानी लोक गाथा है। माँ नंदा की आराधना के लिए गाये जाने वाला यह गीत 8 दिन तक गाया व बजाया जाता है। इसे कुमाऊनी भाषा में 'आठो' कहकर भी पुकारा जाता है। लेकिन लोक विधांए धीरे धीरे खत्म हो रही हैं क्योंकि लोग आधुनिक जीवन शैली, पश्चिमी संस्कृति और तकनीकी की ओर ज्यादा ध्यान दे रहे हैं। शहरीकरण, शिक्षा में कमी, आर्थिक समस्याएं और पांरम्परिक पंरपराओं की उपेक्षा भी इसके मुख्य कारण हैं। लोगों की प्राथमिकताएं बदल गई है और वे अब पुरानी लोक विधाओं में कम रूचि दिखा रहें हैं। इन्हें बचाने के लिए सामूहिक प्रयासों की जरूरत है। जिसमें सरकार, समाज और व्यक्तिगत स्तर पर समर्थन शामिल है केवल सामूहिक प्रयासों से ही हम अपनी सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित रख सकते हैं।

सन्दर्भ

1 सिंह, पोखरिया देव.(1994). कुमाँऊनी लोक साहित्य, पृ. 4।
2 कुमार, जोशी कुलिन. (2016). कुमाँऊ की लोक गाथाओं में रंगमचियता, पृ. 210।
3 किशोर, पेटशाली जुगल. (2012). कुमाऊँनी लोक गीत, पृ. 60।
4 दोसाद पान सिंह, ननौल गायक, साक्षात्कार।